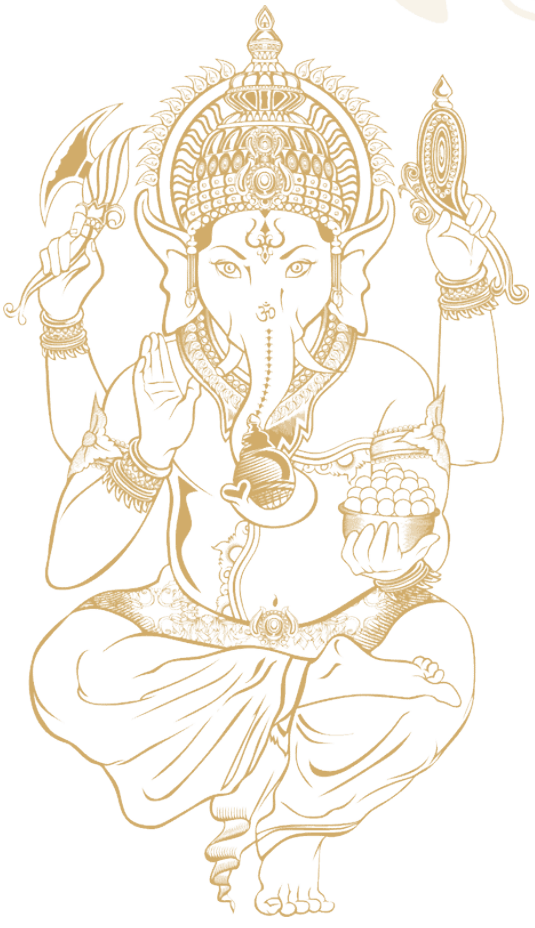

Mr. Bhabani sankar kar

Ms. Subhashree Tripathy

Model: Web-FreeMatching

Order No: 119977813

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
8-09/10/2005	जन्म तिथि	18/01/2006
शनि-रविवार	दिन	बुधवार
घंटे 04:18:00	जन्म समय	13:29:00 घंटे
घटी 56:24:37	जन्म समय(घटी)	17:28:58 घटी
India	देश	India
Bhanjanagar	स्थान	Puri
19:58:00 उत्तर	अक्षांश	19:48:00 उत्तर
84:40:00 पूर्व	रेखांश	85:52:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:08:40	स्थानिक संस्कार	00:13:28 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:44:09	सूर्योदय	06:24:20
17:32:36	सूर्यास्त	17:29:38
23:56:11	चित्रपक्षीय अयनांश	23:56:28

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
बुध 2वर्ष 4मा 28दि		00:43:30	कन्या	लग्न	वृष	09:09:30	शुक्र 14वर्ष 6मा 22दि	
शुक्र		21:48:52	कन्या	सूर्य	मक	04:08:21	सूर्य	
08/03/2015		28:06:30	वृश्चि	चंद्र	सिंह	16:57:33	11/08/2020	
08/03/2035		29:03:55	मेष व	मंगल	मेष	22:33:10	11/08/2026	
शुक्र	08/07/2018	06:25:10	तुला	बुध	धनु	28:37:37	सूर्य	28/11/2020
सूर्य	08/07/2019	02:20:09	तुला	गुरु	तुला	21:52:15	चन्द्र	30/05/2021
चन्द्र	08/03/2021	07:04:19	वृश्चि	शुक्र व	धनु	27:07:15	मंगल	05/10/2021
मंगल	08/05/2022	15:36:38	कर्क	शनि व	कर्क	14:42:17	राहु	29/08/2022
राहु	08/05/2025	19:41:07	मीन व	राहु व	मीन	12:42:42	गुरु	18/06/2023
गुरु	07/01/2028	19:41:07	कन्या व	केतु व	कन्या	12:42:42	शनि	30/05/2024
शनि	08/03/2031	13:28:57	कुंभ व	हर्ष	कुंभ	14:30:29	बुध	05/04/2025
बुध	06/01/2034	20:58:10	मक व	नेप	मक	22:38:07	केतु	11/08/2025
केतु	08/03/2035	28:14:38	वृश्चि	प्लूटो	धनु	01:33:02	शुक्र	11/08/2026

लग्न-चलित

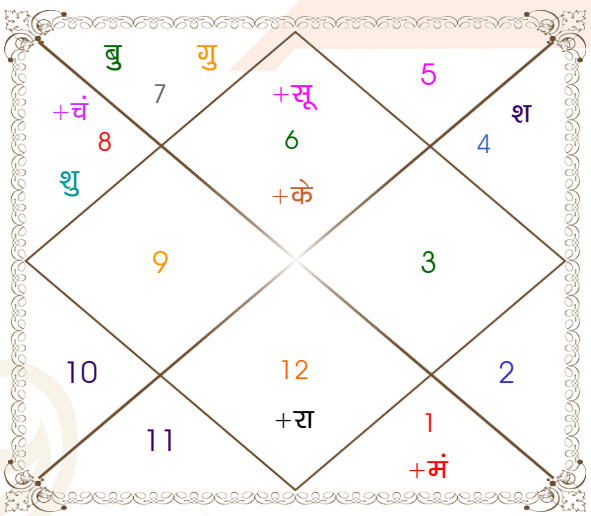

लग्न-चलित

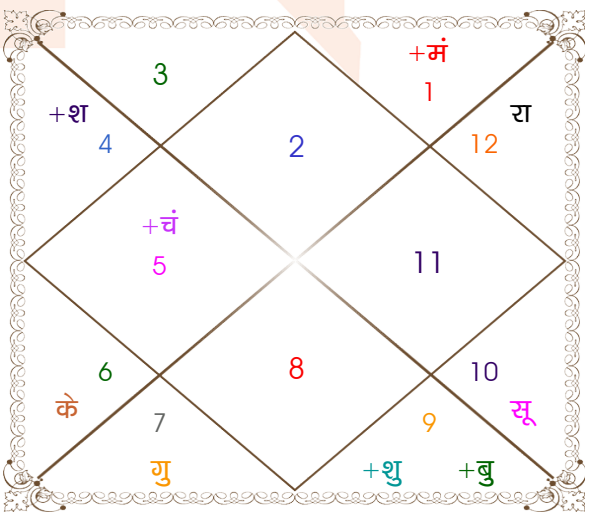

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	क्षत्रिय	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	वनचर	2	0.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मृग	मूषक	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	सूर्य	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	सिंह	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	24.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

डतण ठींइंदप ेदांत ंत का वर्ग मृग है तथा डेण ै नड्ढीतमम ज्तपचंजील का वर्ग श्वान है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण ठींइंदप ेदांत ंत और डेण ै नड्ढीतमम ज्तपचंजील का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण ठींइंदप ेदांत ंत मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में अष्टम् भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण ठींइंदप ेदांत ंत कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण ै नड्ढीतमम ज्तपचंजील मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।
द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण् नड़ीीतमम ज्तपचंजील कि कुण्डली में द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण् नड़ीीतमम ज्तपचंजील कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डेण् नड़ीीतमम ज्तपचंजील कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डतण ठींइंदप`दांत ंत कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण ठींइंदप`दांत ंत तथा डेण् नड़ीीतमम ज्तपचंजील में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।

एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com